भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

पाठ: डायरी का एक पन्ना	कार्यपत्रिका की तिथिः ----------
संसाधन व्यक्ति: श्रीमती बीना स्टीफन	तिथिः----------
विद्यार्थी का नाम :----------	कक्षा : X ब

	प्रश्नोत्तर	
1.	कलकत्तावासियों के लिए 26 जनवरी, 1931 का दिन क्यों महत्तवपूर्ण था ?	
उ.	26 जनवरी, 1930 को गुलाम भारत में पहली बार स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था । तब यहाँ के लोगों ने उत्सव मनाने में खास उत्साह नहीं दिखाया था। 26 जनवरी, 1931 को उसकी पुनरावृत्ति के अवसर पर वे पिछले साल की भी कसर निकाल लेना चाहते थे ।	
2.	सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था ?	
उ.	सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था ।	
3.	विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई ?	
उ.	श्रद्धानंद पार्क में विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और अन्य लोगों को मारकर वहाँ से हटा दिया ।	
4.	लोग अपने -अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे ?	
उ.	लोग अपने -अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर देश भक्त-भावना का संकेत देना चाहते थे ।	
5.	पुलिस ने बड़े - बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?	
उ.	पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को इसलिए घेर लिया था ताकि वहाँ लोग इकट्ठे न	

	हो और न झंडा फहरा सकें ।	
	<u>प्रश्नों के उत्तर 30-25)शब्दों में - लिखिए(</u>	
1.	26 जनवरी, 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई ?	
उ.	जनवरी 26, के दिन को अमर बनाने के लिए काफ़ी तैयारियाँ की गई थी । 1931 केवल प्रचार पर ही दो हज़ार रुपया खर्च किया गया था । कार्यकर्ताओं को उनका कार्य घरबाज़ार के लगभग सभी मका-घर जाकर समझाया गया था । बड़ा-नों पर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया था । कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे मानो स्वतंत्रता मिल गई हो ।	
2.	'आज जो बात थी वह निराली थी 'किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन-अपने आप में निराला है ? स्पष्ट कीजिए ।	
उ.	कानून भंग आंदोलन का काम जब से शुरु हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए ओपन लड़ाई थी । - लोगों में इतना उत्साह था कि निषेधाज्ञा लागू होने के बाद भी तीन बजे से ही मैदान में भीड़ जमा होने लगी थी और लोग टोलियाँ बना बनाकर मैदान में सभा के शुरु होने-का इंतज़ार करने लगे थे । स्त्रियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सदारी की थी । लड़कियों ने-गिरफतारी दी थी । वालेंटियरों ने चुपचाप पुलिस की लाठियाँ सही थी । जहाँतहाँ झंडा-फहराया गया था। भाषण हुए थे। आज़ादी की प्रतिज्ञा की थी ।	
3.	पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था ?	
उ.	पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला कि जनसभा करना गैरकानूनी होगा और एकत्रित होने पर गिरफ़्तारी की जाएगी । उधर इसके जवाब में कौंसिल की तरफ से यह नोटिस निकाला गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी । सर्वसाधारण को उपस्थित होना चाहिए । इस प्रकार दोनों नोटिस एकदूसरे के विरोधाभासी थे । एक में भय दिखाया गया था तो-दूसरे में भय दिखानेवाले को निर्भय होकर चुनौती देने को कहा गया था ।	
4.	धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया ?	
उ.	धर्मतल्ले के मोड़ पर आतेआते जुलूस में भाग लेने वाले अनेक आंदोलनकारी घायल हो-गए।पुलिस दनादन डंडे चलाने शुरु कर दिए । स्त्रियों पर लाठीचार्ज किया गया।दर्जनों	

	स्त्रियाँ लहूजैसे भीड़ बढ़ती गई-लुहान हुईं । जैसे-, पुलिस का अत्याचार उग्र होता गया, जिससे जुलूस टूट गया ।	
5.	डॉरेख तो कर ही रहे थे-दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख ., उनके फ़ोटो भी उतरवा रहे थे ।उन लोगों के फ़ोटो खीचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए ।	
उ.	वे पूरे भारत को दिखा देना चाहते थे कि कलकत्तावासियों में कितना साहस है, साथ ही साथ वे विश्व को अंग्रज़ी हुकूमत की बर्बरता से भी अवगत कराना चाहते थे । बाद में यही फ़ोटो कोर्ट में अपने साथियों के लिए सुबूत के तौर पर पेश करके वे उन्हें पुलिस लॉकअप से छुड़ा सकते थे । ये फ़ोटो आम नागरिक के दिल में जल रही आज़ादी की आग में घी का काम भी करते ।	
	<u>प्रश्नों के उत्तर - लिखिए(शब्दों में 60-50)</u>	
1.	सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी ?	
उ.	सुभाष बाबू के जुलूस के लिए स्त्री समाज ने बहुत तैयारी की थी । पुलिस के रोकने के बावजूद स्त्रियाँ जगहजगह से ठीक स्थान पर- पहुँचने की कोशिश कर रही थीं । जब सुभाष बाबू का जुलूस मोनुमेंट के पास पहुँचा तो पुलिस ने भयंकर रूप से लाठीचार्ज करना शुरु कर दिया। सुभाष बाबू घायल हो गए और आगे नहीं बढ़ पाए। ऐसे में स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ी और उन्होंने वहाँ झंडा फहरा दिया । वे बहुत बड़ी संख्या में लाठीचार्ज की परवाह किए बिना बढ़ती रहीं और आज़ादी की घोषणा पढ़ने लगीं । जब सुभाष बाबू को पकड़कर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया तो स्त्रियों का एक बड़ा हिस्सा विमल प्रतिभा के नेतृत्व में जुलूस बनाकर वहाँ से आगे बढ़ा ।	
2.	जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई ?	
उ.	जुलूस के लालबाज़ार आने पर उसका सामना बहुत बड़ी पुलिस फ़ौज से हुआ । पुलिस अभी भी रुकरुककर डेंडे चला रही थी । करीब पौन घंटे बाद पुलिस की गाड़ी आई ।- जुलूस का नेतृत्व करनवाले बड़ेबड़े नेता जैसे वृजलाल गोयनका-, जानकी देवी और मदालसा समेत स्त्रियाँ भी गिरफ़्तार कर ली गईं 105, थाने ले जिन्हें थाने ले जाकर बहुत मारा गया । कलकत्ता में आज तक इतनी स्त्रियाँ एक साथ कभी गिरफ़्तार न हुई थीं । करीब दो सौ लोग घायल हुए।	
3.	'जब से कानून भंग का काम शुरु हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान	

	में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए – ओपन लड़ाई थी । 'यहाँ पर कौन - से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था ? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए ।	
उ.	यहाँ अंग्रेजों द्वारा लागू कानून भंग करने की बात की गई है । जो हर हाल में आम भारतीय नागरिक को अपने ही देश में गुलाम बने रहने पर विवश कर रही थी और ये कानून आर्थिक समृद्धि के विरुद्ध थी । इन हालात में आम भारतीय का अपनी आज़ादी के लिए उठ खड़े होना और अपने हृदय की आवाज़ बहरे गोरों तक पहुँचना आवश्यक था ।अत: ऐसे कानूनों को भंग करना बिल्कुल न्यायपूर्ण था । तत्कालीन कांग्रेस पार्टी ने सोच समझ कर भारत को अंग्रेज़ों के शासन से मुक्त कराने के लिए- कानूनभंग करने का निर्णय लिया था ।-	
4.	बहुत से लोग घायल हुए-, बहुतों को लॉकअप में रखा गया , बहुतसी स्त्रियाँ जेल- गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है । आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है ? अपने शब्दों में लिखिए ।	
उ.	हमारे विचार में यह सब अपूर्व इसलिए है क्योंकि इतनी बड़ी संख्या में लोगों ने पहले कभी अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जुलूस नहीं निकाला, न ही पहले कभी इतने बड़े पैमाने पर सरकार को खुला चैलेंज दिया गया था । पुलिस ने भी क्रूरता का रास्ता अपनाया । लाठी चार्ज किया, भारी संख्या में लोग घायल हुए। उन्हें गिरफ़्तार किया गया । सबसे बड़ी बात तो यह है कि इतनी भारी संख्या में स्त्रियों ने जुलूस निकाला और गिरफ़्तार हुईं ।इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था ।	